COURSE :- MASTER OF LIBRARY AND INFORMATION SCIENCE (MLIS)

PAPER :- 7TH

(RESEARCH METHODOLOY)

TOPIC :- RESEARCH REPORT: WRITING

(अनुवाद सेवाएँ)

उद्देश्य :- शोध का महत्त्वपूर्ण चरण रिपोर्ट लेखन होता है। इस पाठ में इसे तैयार करने की विधि बताना है।

PREPARED BY :- DINESH SINGH, CHIEF COORDINATOR, LIBRARY SCIENCE, NOU

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

अनुसंधान प्रतिवेदन : लेखन

(Research Report : Writing)

किसी भी समाज का विकास अनुसंधानों पर आश्रित है। यदि अनुसंधान नहीं हुए होते तो आज हमारा समाज अथवा देश इतना विकसित नहीं हुआ होता। अनुसंधानकार्य अनुसंधानकर्ताओं द्वारा सम्पन्न किये जाते हैं जो अनुसंधान

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

सस्थाओं, विश्वविद्यालयों एवम् अन्य औद्योगिक संगठनों में सम्पन्न किये जाते हैं। जब कोई अनुसंधानकर्ता अपना अनुसंधान कार्य अपने अनुसंधान निदेशक के अधीन रहकर पूर्ण कर लेता है तब उसे अपना अनुसंधान कार्य एक प्रतिवेदन के रूप में लिखकर तत्सम्बन्धित विश्वविद्यालय अथवा संस्था एवम् संगठन में मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करना होता है जिससे **अनुसंधान प्रतिवेदन (Research Report)** कहते हैं। जब यही अनुसंधान प्रतिवेदन किसी विश्वविद्यालय अथवा किसी उच्च शिक्षा संस्था में विषय की पीएच.डी. अथवा डी.लिट/डी.एससी. की डिग्री प्राप्त करने के लिए प्रस्तुत किया जाता है तब इसे **शोध-प्रबन्ध** (Thesis) कहते हैं।

अनुसधान प्रतिवेदन तथा शोध-प्रबन्ध में कोई खास अन्तर नहीं है दोनों का उद्देश्य भी अपने अनुसंधान को सबके सम्मुख लाना होता है लेकिन शोध-प्रबन्ध का उद्देश्य कोई डिग्री प्राप्त करना भी होता है। कुछ विद्वान दोनों को एक ही मानते हैं इसलिए हम भी दोनों को एक ही मानकर विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं।

अनुसंधान प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के कारण (Purpose of Research Report)

अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के प्रतिवेदन को प्रस्तुत करना अनेक कारणों से आवश्यक तथा एक प्रकार से अनिवार्य होता है। वे कारण निम्न प्रकार हैं –

1. अनुसंधान प्रतिवेदन प्रस्तुत करने का प्रथम तथा प्रमुख कारण यह होता है कि इस प्रकार प्रतिवेदन के प्रस्तुतीकरण में स्वयं अनुसंधानकर्ता की अपनी स्वयं की एक प्रबल जिज्ञासा की सन्तुष्टि होती है।
2. इसके प्रस्तुत करने का दूसरा कारण यह होता है जब तक प्रतिवेदन प्रस्तुत एवम् प्रकाशित नहीं होता तब तक सम्बन्धित क्षेत्र के अन्य अनुसंधानकर्ताओं को इस अनुसंधानकर्ता द्वारा सम्पन्न किए गए अनुसंधान कार्य का पता नहीं लग पाता है और ऐसा अनुसंधान चाहे वह कितना ही उच्च कोटि एवम् महत्वपूर्ण क्यों न हो एक प्रकार से अनुसंधान-जगत से अदृश्य एवम् उपेक्षित ही रहता है।
3. अनुसंधान प्रतिवेदन प्रस्तुत करने का तीसरा कारण अनुसंधान का एक सामान्य उद्देश्य प्राय: वैज्ञानिक भण्डार को निरन्तर विकसित करना तथा उनमें वृद्धि

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

करना रहता है। क्योंकि यदि किये गये अनुसंधान के निष्कर्षों एवम् परिणामों को अनुसंधान प्रतिवेदन के माध्यम से अनुसंधान पत्रिकाओं में प्रकाशन हेतु प्रस्तुत ही नहीं किया जाता है तब विद्यमान वैज्ञानिक ज्ञान भण्डार में वृद्धि एवम् विकास होने का प्रश्न ही नहीं उठता है।

4. इन कारणों के अतिरिक्त एक कारण अनुसंधान प्रतिवेदन प्रस्तुत करने का यह भी है कि इस क्षेत्र से सम्बन्धित अन्य अनुसंधानकर्ता भी अनुसंधान के इस प्रतिवेदन को भी देखें एवम् जानें तथा इसके सम्बन्ध में अपनी टिप्पणी अथवा आलोचना प्रस्तुत करें और कोई अनुसंधानकर्ता यदि आवश्यक समझे तो उस पर अपना कार्य आगे बढ़ा सके। इस प्रकार अनुसंधान प्रतिवेदन के प्रस्तुतीकरण से नवीन अनुसंधानों के-प्रति प्रेरणा प्राप्त होती है। इससे सैद्धान्तिक ज्ञान रचना में भी सहायता मिलती है और इससे कभी-कभी किसी एक व्यावहारिक समस्या के समाधान में सुविधा सुलभ होती है।

इस प्रकार अनुसंधान प्रतिवेदन के प्रस्तुतीकरण से वैज्ञानिक-जगत के प्रति सैद्धान्तिक एवम् व्यावहारिक सम्प्रेक्षण तथा महत्वपूर्ण योगदान की विशिष्ट भूमिका सम्पन्न होती है तथा साथ ही साथ, नवीन अनुसंधानों की रचनात्मक पृष्ठभूमि भी प्रशस्त होती रहती है।

अनुसंधान प्रतिवेदन के मुख्य रूप से तीन भाग होते हैं - **भूमिका, प्रतिवेदन लेखन** तथा **निष्कर्ष**। प्रतिवेदन लेखन ही इसका मूल भाग होता है।

(अ) भूमिका (Preface) — अनुसंधान के प्रतिपाद्य का संकेत करना भूमिका कहलाता है। भूमिका, प्रतिवेदन लेखन की पृष्ठभूमि का कार्य करती है। भूमिका अनुसंधान रूपी शरीर का मुख है जिस प्रकार मुख पर प्रतिबिम्बित हाव भावों से शरीरगत विकारों का पता चल जाता है उसी प्रकार भूमिका से अनुसंधान की व्यवस्था तथा उसके स्तर का पता चल जाता है। भूमिका का प्रतिवेदन में वही स्थान है जो नाटक में सूक्ष्मकथा का होता है। भूमिका अनुसंधानकर्ता द्वारा लिखी जाती है इसलिए इसे लिखते समय अनुसंधानकर्ता को सबसे पहले अनुसंधान के लिए निर्वाचित विषय के औचित्य को प्रमाणित करना पड़ता है। इसलिए निर्वाचित विषय का क्षेत्र स्पष्ट तथा निश्चित होना चाहिए।

भूमिका में निम्न बिन्दुओं पर लिखा जाता है -

1. पूर्व अनुसंधान कार्यों का परिचय।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

2. पूर्व अनुसंधान कार्यों की उपलब्धियाँ तथा कमियाँ ।
3. पूर्व अनुसंधान कार्यों की श्रेणियाँ ।
4. पूर्व अनुसंधान कार्यों की विश्लेषण पद्धति ।
5. पूर्व अनुसंधान कार्यों की विवेचना शैली ।
6. प्रस्तुत अनुसंधान कार्य की आवश्यकता, प्रेरणा एवम् महत्व ।
7. प्रस्तुत अनुसंधान कार्य की सीमाएँ एवम् सम्भावनाएँ ।
8. प्रस्तुत अनुसंधान कार्य की श्रेणी ।
9. प्रस्तुत अनुसंधान कार्य की विश्लेषण पद्धति ।
10. प्रस्तुत अनुसंधान कार्य की विवेचन-शैली ।
11. डेटाओं के संग्रहण करने की विधि ।
12. डेटाओं के विश्लेषण की विधि ।

कुछ विद्वानों ने भूमिका को प्रस्तावना नाम दिया है तथा कुछ ने उसे प्राक्कथन कहा है। सैद्धान्तिक दृष्टि से वे भूमिका तथा प्राक्कथन में अन्तर मानते हैं परन्तु व्यावहारिक दृष्टि से दोनों को एक ही स्वीकारते हैं। प्रतिवेदन हेतु लिए गये विषय की उपयोगिता, पूर्व अनुसंधान कार्यों की संख्या, उनकी उपलब्धियाँ तथा कमियाँ, प्रस्तुत प्रतिवेदन के प्रणयन की आवश्यकता, अध्ययन की विधि आदि तत्व भूमिका के अन्तर्गत विवेचन किये जाते हैं। कुछ विद्वान इन तत्वों का विवेचन **प्राक्कथन** में करते हैं जिसका विवरण निम्न प्रकार है –

प्राक्कथन (Foreword) — प्राक्कथन का अर्थ है पूर्व का कथन अर्थात पहले कहना। अनुसंधान कार्य में प्राक्कथन का अर्थ अनुसधांन के क्षेत्र में प्रवेश की प्रेरणा, विषय विशेष के प्रति संस्कार, अनुसंधान कार्य की प्रक्रिया आदि का उल्लेख से होता है। प्राक्कथन को प्रस्तावना, विषय प्रवेश, आमुख आदि भी कहते हैं। प्राक्कथन में निम्न बातों का उल्लेख होना आवश्यक है –

1. विषय का महत्व एवम् उपयोगिता ।
2. पूर्व अनुसंधान कार्यों की संख्या, उनकी उपलब्धियाँ तथा कमियाँ ।
3. प्रस्तुत प्रतिवेदन के प्रणयन की आवश्यकता ।
4. अध्ययन क्रम ।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

अध्ययन की सामग्री ।

अध्ययन की विधि ।

प्रतिवेदन का विभाजन ।

5. प्रतिवेदन की मौलिकता ।

6. कृतज्ञता ज्ञापन ।

(ब) प्रतिवेदन लेखन (Report Writing) – लेखन, अनुसंधान प्रतिवेदन का मूलभाग होता है अनुसंधान सामग्री का निबन्ध तथा ग्रन्थन, प्रतिवेदन लेखन कहलाता है यह प्रतिवेदन का प्राणतत्व होता है। अनुसंधानकर्ता अपने अनुसंधान कार्य को पूरा करके अपना अनुसंधान प्रतिवेदन लिखता है अर्थात वह अनुसंधान प्रतिवेदन का लेखक है इसलिए उसे इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि अनुसंधान प्रतिवेदन का ढंग क्या है? अनुसंधान कार्य की सफलता मुख्य रूप से प्रतिवेदन के इसी मूल भाग **प्रतिवेदन-लेखन** पर निर्भर करती है तथा यहीं पर अनुसंधानकर्ता की योग्यता का पता चलता है।

अनुसंधान कार्य करने हेतु विषय का निर्वाचन, रूपरेखा निर्माण, डेटाओं का संकलन, निरीक्षण/ परीक्षण, वर्गीकरण, विश्लेषण-संश्लेषण, समायोजन तथा विवेचन प्रतिवेदन लेखन की प्रामाणिकता को सत्यापित करने वाले प्रतिवेदन के पूर्व विवेचन करने के बिन्दु हैं । ये सभी प्रतिवेदन लेखन की पूर्ववर्ती प्रक्रिया के विविध चरण हैं। अनुसंधान प्रक्रिया के इन विविध चरणों की प्रामाणिकता तथा वैज्ञानिकता प्रतिवेदन लेखन को अनुसंधान के मूल्यों के सत्यापन का आधार प्रदान करती है। अनुसंधान प्रतिवेदन-लेखन तथा पूर्ववर्ती-अनुसंधान प्रक्रिया के अंगों में एक निश्चित अनुपात होना चाहिए।

विषय निर्वाचन के अनुसार ही रूपरेखा का निर्माण होना चाहिए और रूपरेखा में अंकित बिन्दुओं के अनुसार ही डेटाओं का संग्रह करना चाहिए। संग्रहीत डेटाओं के वर्गीकरण, विभाजन भी रूपरेखा में अंकित अध्यायों, शीर्षकों तथा उप-शीर्षकों के अनुसार होना चाहिए। वर्गीकृत विभाजित डेटाओं का विश्लेषण तथा संयोजन होना चाहिए। संयोजित अनुसंधान-सामग्री का अनुसंधान बिन्दुओं की प्रकृति के अनुसार ही समायोजन होना चाहिए। संयोजन तथा समायोजन की प्रक्रिया निरीक्षण-परीक्षण, सारभूत डेटाओं के ग्रहण तथा निरर्थक डेटाओं के परित्याग की प्रक्रिया है। निर्वाचित विषय की प्रकृति तथा संरचना का डेटा संग्रह,

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

विश्लेषण, नियोजन तथा समायोजन की प्रक्रिया से गहरा सम्बन्ध है। ये समस्त प्रक्रिया तत्व प्रतिवेदन-लेखन के लिए एक मुख्य आधार प्रस्तुत करते हैं। उक्त प्रक्रिया तत्व जितने ही निर्मल, प्रामाणिक, सत्य तथा पुष्ट होंगे, प्रतिवेदन-लेखन उतना ही प्रामाणिक एवम् उच्च स्तरीय होगा। अतः यह कहा जा सकता है कि अनुसंधान प्रक्रिया, प्रतिवेदन लेखन की सफलता-असफलता, उच्चता-निम्नता तथा वैज्ञानिकता-अवैज्ञानिकता की कसौटी है।

(स) निष्कर्ष (Conclusions) – निष्कर्ष निष्पादन अनुसंधान प्रतिवेदन का अंतिम चरण है। भूमिका, प्रतिवेदन-लेखन तथा **निष्कर्ष** प्रतिवेदन के तीन भाग मुख्य होते हैं। **भूमिका** प्रतिवेदन की पृष्ठभूमि है। **लेखन** प्रतिवेदन, का मूल भाग है और **निष्कर्ष**, प्रतिवेदन का समापन भाग है। निष्कर्ष, प्रतिवेदन के मूलभाग का सार तत्व होता है इसे प्रतिवेदन में प्रस्तुत अनुसंधान सामग्री का प्रतिविम्ब भी कहा जा सकता है। इसमें अनुसंधान के परिणामों को उद्घोषित किया जाता है। प्रतिवेदन की सफलता बहुत कुछ निष्कर्ष पर ही आधारित होती है इसलिए कभी-कभी अनुसंधान परीक्षक, प्रतिवेदन के मूल भाग को पढ़े बिना ही निष्कर्ष के आधार पर अनुसंधान प्रतिवेदन का मूल्यांकन करते हैं।

अनुसंधान प्रतिवेदन का प्रारूप (Format of the Thesis)

1. प्रारम्भिक सामग्री

   (क) मुखपृष्ठ, (ख) स्वीकृति-पत्र, (ग) विषय-सारिणी (ड) चित्र-सूची।

2. प्रतिवेदन का मूल भाग

   (क) भूमिका (प्रस्तावना)

   समस्या की प्रस्तुति

   पूर्व-अध्ययन का विश्लेषण ।

   प्राकल्पना सम्बन्धी अवधारणाएँ ।

   प्राकल्पनाएँ ।

   की वर्ड की परिभाषाएँ ।

   समस्या का सीमांकन ।

   (ख) अध्ययन की विधि (प्रतिवेदन लेखन) ।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

अध्ययन की प्रक्रिया ।

डेटाओं के स्रोत ।

आवश्यक उपकरण ।

सारणीयन, प्रस्तुतीकरण तथा विश्लेषण एवम् व्याख्या ।

मूलवस्तु ।

सारिणी चित्र ।

(ग) निष्कर्ष एवम् सारांश ।

संक्षिप्त सारांश ।

प्राप्त निष्कर्ष ।

अध्ययन की सीमाएँ ।

भावी अध्ययन के लिए सुझाव ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची ।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner